

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-जनवरी-2015 15:46 IST

**“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ**

विशाल संख्या में आए हुए माताओं, बहनों और भाईयों,

आज पानीपत की धरती पर हम एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी की और कदम रख रहे हैं। यह अवसर किस सरकार ने क्या किया और क्या नहीं किया? इसका लेखा-जोखा करने के लिए नहीं है। गलती किसकी थी, गुनाह किसका था? यह आरोप-प्रत्यारोप का वक्त नहीं है। पानीपत की धरती पर यह अवसर हमारी जिम्मेवारियों का एहसास कराने के लिए है। सरकार हो, समाज हो, गांव हो, परिवार हो, मां-बाप हो हर किसी की एक सामूहिक जिम्मेवारी है और जब तक एक समाज के रूप में हम इस समस्या के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे, जागरूक नहीं होंगे, तो हम अपना ही नुकसान करेंगे ऐसा नहीं है बल्कि हम आने वाली सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी एक भयंकर संकट को निमंत्रण दे रहे हैं और इसलिए मेरे भाईयों और बहनों और मैं इस बात के लिए मेनका जी और उनके विभाग का आभारी हूँ कि उन्होंने इस काम के लिए हरियाणा को पसंद किया। मैं मुख्यमंत्री जी का भी अभिनंदन करता हूँ कि इस संकट को इन्होंने चुनौती को स्वीकार किया। लेकिन यह कार्यक्रम भले पानीपत की धरती पर होता हो, यह कार्यक्रम भले हरियाणा में होता हो, लेकिन यह संदेश हिंदुस्तान के हर परिवार के लिए है, हर गांव के लिए है, हर राज्य के लिए है।

क्या कभी हमने कल्पना की है जिस प्रकार की समाज के अवस्था हम बना रहे हैं अगर यही चलता रहा तो आने वाले दिनों में हाल क्या होगा? आज भी हमारे देश में एक हजार बालक पैदा हो, तो उसके सामने एक हजार बालिकाएं भी पैदा होनी चाहिए। वरना संसार चक्र नहीं चल सकता। आज पूरे देश में यह चिंता का विषय है। यही आपके हरियाणा में झज्जर जिला देख लीजिए, महेन्द्रगढ़ जिला देख लीजिए। एक हजार बालक के सामने पौने आठ सौ बच्चियां हैं। हजार में करीब-करीब सवा दौ सौ बच्चे कुंवारे रहने वाले हैं। मैं जरा माताओं से पूछ रहा हूँ अगर बेटी पैदा नहीं होगी, तो बहू कहां से लाओगे? और इसलिए जो हम चाहते हैं वो समाज भी तो चाहता है। हम यह तो चाहते हैं कि बहू तो हमें पढ़ी-लिखी मिले, लेकिन बेटी को पढ़ाना है तो पास बार सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। यह अन्याय कब तक चलेगा, यह हमारी सोच में यह दोगलापन कब तक चलेगा? अगर बहू पढ़ी-लिखी चाहते हैं तो बेटी को भी पढ़ाना यह हमारी जिम्मेवारी बनता है। अगर हम बेटी को नहीं पढ़ाएंगे, तो बहू भी पढ़ी-लिखी मिले। यह अपेक्षा करना अपने साथ बहुत बड़ा अन्याय है। और इसलिए भाईयों और बहनों, मैं आज आपके बीच एक बहुत बड़ी पीड़ा लेकर आया हूँ। एक दर्द लेकर आया हूँ। क्या कभी कल्पना की हमने जिस धरती पर मानवता का संदेश होता है, उसी धरती पर मां के गर्भ में बच्ची को मौत के घाट उतार दिया जाए।

यह पानीपत की धरती, यह उर्दू साहित्य के scholar अलताफ हुसैन हाली की धरती है। यह अलताफ हुसैन हाली इसी पानीपत की धरती से इस शायर ने कहा था। मैं समझता हूँ जिस हरियाणा में अलताफ हुसैन जैसे शायर के शब्द हो, उस हरियाणा में आज बेटियों का यह हाल देखकर के मन में पीड़ा होती है। हाली ने कहा था....उन्होंने कहा था ए मांओ, बहनों बेटियां दुनिया की जन्नत तुमसे हैं, मुल्कों की बस्ती हो तुम, गांवों की इज्जत तुम से हो। आप कल्पना कर सकते हैं बेटियों के लिए कितनी ऊंची कल्पना यह पानीपत का शायर करता है और हम बेटियों को जन्म देने के लिए भी तैयार नहीं हैं।

भाईयों और बहनों हमारे यहां सदियों से जब बेटी का जन्म होता था तो शास्त्रों में आशीर्वाद देने की परंपरा थी और हमारे शास्त्रों में बेटी को जो आशीर्वाद दिये जाते थे वो आशीर्वाद आज भी हमें, बेटियों की तरफ किस तरह देखना, उसके लिए हमें संस्कार देते हैं, दिशा देते हैं। हमारे शास्त्रों ने कहा था जब हमारे पूर्वज आशीर्वाद देते थे तो कहते थे - यावद गंगा कुरूक्षेत्रे, यावद तिस्तदी मेदनी, यावद गंगा कुरूक्षेत्रे, यावद तिस्तदी मेदनी, यावद सीताकथा लोके, तावद जीवेतु बालिका। हमारे शास्त्र कहते थे जब तक गंगा का नाम है, जब तक कुरूक्षेत्र की याद है, जब तक हिमालय है, जब तक कथाओं में सीता का नाम है, तब तक हे बालिका तुम्हारा जीवन अमर रहे। यह आशीर्वाद इस धरती पर दिये जाते थे। और उसी धरती पर बेटी को बेमौत मार दिया जाए और इसलिए मेरे भाईयों और बहनों उसके मूल में हमारा मानसिक दारिद्र्य जिम्मेवार है, हमारे मन की बीमारी जिम्मेवार है और यह मन की बीमारी क्या है? हम बेटे को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और यह मानते हैं बेटी तो पराये घर जाने वाली है। यहां जितनी माताएं-बहनें बैठी हैं। सबने यह अनुभव किया होगा यह मानसिक

दारिद्र्य की अनुभूति परिवार में होती है। मां खुद जब बच्चों को खाना परोसती है। खिचड़ी परोसी गई हो और घी डाल रही हो। तो बेटे को तो दो चम्मच घी डालती है और बेटी को एक चम्मच घी डालती है और जब, मुझे माफ करना भाईयों और बहनों यह बीमारी सिर्फ हरियाणा की नहीं है यह हमारी देश की मानसिक बीमारी का परिणाम है और बेटी को, अगर बेटी कहे न न मम्मी मुझे भी दो चम्मच दे दो, तो मां कहते से डरती नहीं है बोल देती है, अरे तुझे तो पराये घर जाना है, तुझे घी खाकर के क्या करना है। यह कब तक हम यह अपने-पराये की बात करते रहेंगे और इसलिए हम सबका दायित्व है, हम समाज को जगाए।

कभी-कभी जिस बहन के पेट में बच्ची होती है वो कतई नहीं चाहती है कि उसकी बेटी को मार दिया जाए। लेकिन परिवार का दबाव, माहौल, घर का वातावरण उसे यह पाप करने के लिए भागीदार बना देता है, और वो मजबूर होती है। उस पर दबाव डाला जाता है और उसी का नतीजा होता है कि बेटियों को मां के गर्भ में ही मार दिया जाता है। हम किसी भी तरह से अपने आप को 21वीं सदी के नागरिक कहने के अधिकारी नहीं हैं। हम मानसिकता से 18वीं शताब्दी के नागरिक हैं। जिस 18वीं शताब्दी में बेटी को “दूध-पीती” करने की परंपरा थी। बेटी का जन्म होते ही दूध के भरे बर्तन के अंदर उसे डूबो दिया जाता था, उसे मार दिया जाता था। हम तो उनसे भी गए-बीते हैं, वो तो पाप करते थे गुनाह करते थे। बेटी जन्मती थी आंखें खोलकर के पल-दो-पल के लिए अपनी मां का चेहरा देख सकती थी। बेटी जन्मती थी, दो चार सांस ले पाती थी। बेटी जन्मती थी, दुनिया का एहसास कर सकती थी। बाद में उस मानसिक बीमारी के लोग उसको दूध के बर्तन में डालकर के मार डालते थे। हम तो उनसे भी गए-बीते हैं। हम तो बेटी को मां का चेहरा भी नहीं देखने देते, दो पल सांस भी नहीं लेने देते। इस दुनिया का एहसास भी नहीं होने देते। मां के गर्भ में ही उसे मार देते हैं। इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है और हम संवेदनशील नहीं हैं ऐसा नहीं है।

कुछ साल पहले इसी हरियाणा में कुरुक्षेत्र जिले में हल्दा हेड़ी गांव में एक ट्यूबवेल में एक बच्चा गिर गया, प्रिंस.. प्रिंस कश्यप । और सारे देश के टीवी वहां मौजूद थे। सेना आई थी एक बच्चे को बचाने के लिए और पूरा हिंदुस्तान टीवी के सामने बैठ गया था। परिवारों में माताएं खाना नहीं पका रही थी। हर पल एक-दूसरे को पूछते थे क्या प्रिंस बच गया, क्या प्रिंस सलामत निकला ट्यूबवेल में से? करीब 24 घंटे से भी ज्यादा समय हिंदुस्तान की सांसे रुक गई थी। एक प्रिंस.. केरल, तमिलनाडु का कोई रिश्तेदार नहीं था। लेकिन देश की संवेदना जग रही है। उस बच्चे को जिंदा निकले, इसके लिए देशभर की माताएं-बहनें दुआएं कर रही थी। मैं जरा पूछना चाहता हूं कि एक प्रिंस जिसकी जिंदगी पर संकट आए, हम बेचैन बन जाते हैं। लेकिन हमारे अड़ोस-पड़ोस में आए दिन बच्चियों को मां के पेट में मार दिया जाए, लेकिन हमें पीड़ा तक नहीं होती है, तब सवाल उठता है। हमारी संवेदनाओं को क्या हुआ है? और इसलिए आज मैं आपके पास आया हूं। हमें बेटियों को मारने का हक नहीं है।

यह सोच है बुढ़ापे में बेटा काम आता है। इससे बड़ी गलतफहमी किसी को नहीं होनी चाहिए। अगर बुढ़ापे में बेटे काम आए होते तो पिछले 50 साल में जितने वृद्धाश्रम खुले हैं, शायद उतने नहीं खुले होते। बेटों के घर में गाड़ियां हो, बंगले हो, लेकिन बाप को वृद्धाश्रम में रहना पड़ता है ऐसी सैकड़ों घटनाएं हैं और ऐसी बेटियों की भी घटनाएं हैं। अगर मां-बाप की इकलौती बेटी है तो मेहनत करे, मजदूरी करे, नौकरी करे, बच्चों को tuition करे लेकिन बूढ़े मां-बाप को कभी भूखा नहीं रहने देती। ऐसी सैकड़ों बेटियां बाप से भी सेवा करने के लिए, मां-बाप की सेवा करने के लिए अपने खुद के सपनों को चूर-चूर कर देने वाली बेटियों की संख्या अनगिनत है और सुखी बेटों के रहते हुए दुःखी मां-बाप की संख्या भी अनगिनत है। और इसलिए मेरे भाईयों और बहनों यह सोच कि बेटा आपका बुढ़ापा संभालेगा, भूल जाइये। अगर आप अपनी संतानों को सामान रूप से संस्कारित करके बड़े करोगे, तो आपकी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा।

कभी-कभी लगता है कि बेटी तो पराये घर की है। मैं जरा पूछना चाहता हूं सचमुच में यह सही सोच है क्या? अरे बेटी के लिए तो आपका घर पराया होता है जिस घर आप भेजते हो वो पल-दो-पल में उसको अपना बना लेती है। कभी पूछती नहीं है कि मुझे उस गांव में क्यों डाला मुझे उस कुटुम्ब में क्यों डाल दिया? जो भी मिले उसको सर-आंखों पर चढ़ाकर के अपना जीवन वहां खपा देती है और अपने मां-बाप के संस्कारों को उजागर करती है। अच्छा होता है तो कहती है कि मेरी मां ने सिखाया है, अच्छा होता है तो कहती है कि मां-बाप के कारण, मेरे मायके के संस्कार के कारण मैं अच्छा कर रही हूं। बेटी कहीं पर भी जाएं वहां हमेशा आपको गौरव बढ़े, उसी प्रकार का काम करती है।

मैंने कल्पना की, आपने कभी सोचा है यहीं तो हरियाणा की धरती, जहां की बेटी कल्पना चावला पूरा विश्व जिसके नाम पर गर्व करता है। जिस धरती पर कल्पना चावला का जन्म हुआ हो, जिसको को लेकर के पूरा विश्व गर्व करता हो, उसी हरियाणा में मां के पेट में पल रही कल्पना चावलाओं को मार करके हम दुनिया को क्या मुंह दिखाएंगे और इसलिए मेरे भाईयों और बहनों मैं आप आपसे आग्रह करने आया हूं और यह बात देख लीजिए अगर अवसर मिलता है तो बेटे से बेटियां ज्यादा कमाल करके दिखाती हैं।

आज भी आपके हरियाणा के और हिंदुस्तान के किसी भी राज्य के 10th या 12th के result देख लीजिए। first stand में से छह या सात तो बच्चियां होती हैं जीतने वाली, बेटों से ज्यादा नंबर लाती हैं। आप हिंदुस्तान का पूरा education sector देख लीजिए। teachers में 70-75 प्रतिशत महिलाएं शिक्षक के रूप में काम कर रही हैं। आप health sector देख लीजिए health sector में 60 प्रतिशत से ज्यादा, सूश्रूषा के क्षेत्र में बहनें दिखाई देती हैं। अरे हमारा agriculture sector, पुरुष सीना तान कर न घूमें कि पुरुषों से ही agriculture sector चलता है। अरे आज भी भारत में agriculture और पशुपालन में महिलाओं की बराबरी की हिस्सेदारी है। वो खेतों में जाकर के मेहनत करती हैं, वो भी खेती में पूरा contribution करती हैं और खेत में काम करने वाले मर्दों को संभालने का काम भी वही करती हैं।

पश्चिम के लोग भले ही कहते हों, लेकिन हमारे देश में महिलाओं का सक्रिय contribution आर्थिक वृद्धि में रहता है। खेलकूद में देखिए पिछले दिनों जितने game हुए, उसमें ईनाम पाने वाले अगर लड़के हैं तो 50 प्रतिशत ईनाम पाने वाली लड़कियां हैं। gold medal लाने वाली लड़कियां हैं। खेलकूद हो, विज्ञान हो, व्यवसाय हो, सेवा का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो, आज महिलाएं रत्तीभर भी पीछे नहीं हैं और यह सामर्थ्य हमारी शक्ति में है। और इसलिए मैं आपसे आग्रह करने आया हूं कि हमें बेटे और बेटी में भेद करने वाली बीमारी से निकल जाना चाहिए। “बेटा-बेटी एक समान” यही हमारा मंत्र होना चाहिए और एक बार हमारे मन में बेटा और बेटी के प्रति एक समानता का भाव होगा तो यह पाप करने की जो प्रवृत्ति है वह अपने आप ही रूक जाएगी। और यह बात, इसके लिए commitment चाहिए, संवेदना चाहिए, जिम्मेवारी चाहिए।

मैं आज आपके सामने एक बात बताना चाहता हूं। यह बात मेरे मन को छू गई। किसी काम के लिए जब commitment होता है, एक दर्द होता है तो इंसान कैसे कदम उठाता है। हमारे बीच माधुरी दीक्षित जी बैठी हैं। माधुरी नैनो। उनकी माताजी ICU में हैं, वो जिंदगी की जंग लड़ रही हैं और बेटी पानीपत पहुंची हैं। और मां कहती है कि बेटी यह काम अच्छा है तुम जरूर जाओ। Weather इतना खराब होने के बावजूद भी माधुरी जी अपनी बीमार मां को छोड़कर के आपकी बेटी बचाने के लिए आपके बीच आकर के बैठी हैं और इसलिए मैं कहता हूं एक commitment चाहिए, एक जिम्मेवारी का एहसास चाहिए और यह एक सामूहिक जिम्मेवारी में साथ है। गांव, पंचायत, परिवार, समाज के लोग इन सबको दायित्व निभाना पड़ेगा और तभी जाकर के हम इस असंतुलन को मिटा सकेंगे। यह रातों-रात मिटने वाला नहीं है। करीब-करीब 50 साल से यह पाप चला है। आने वाले 100 साल तक हमें जागरूक रूप से प्रयास करना पड़ेगा, तब जाकर के शायद स्थिति को हम सुधार पाएंगे। और इसलिए मैंने कहा आज का जो यह पानीपत की धरती पर हम संकल्प कर रहे हैं, यह संकल्प आने वाली सदियों तक पीढ़ियों की भलाई करने के लिए है।

भाईयों बहनों आज यहां भारत सरकार की और योजना का भी प्रारंभ हुआ है - **सुकुन्या समृद्धि योजना**। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। इसको निरंतर बल देना है और इसलिए उसके लिए सामाजिक सुरक्षा भी चाहिए। यह **सुकुन्या समृद्धि योजना** के तहत 10 साल से कम उम्र की बेटी एक हजार रुपये से लेकर के डेढ़ रुपये लाख तक उसके मां-बाप पैसे बैंक में जमा कर सकते हैं और सरकार की तरफ से हिंदुस्तान में किसी भी प्रकार की परंपरा में ब्याज दिया जाता है उससे ज्यादा ब्याज इस बेटी को दिया जाएगा। उसका कभी Income Tax नहीं लगाया जाएगा और बेटी जब 21 साल की होगी, पढ़ाई पूरी होगी या शादी करने जाती होगी तो यह पैसा पूरा का पूरा उसके हाथ में आएगा और वो कभी मां-बाप के लिए बोझ महसूस नहीं होगी।

काशी के लोगों ने मुझे अपना MP बनाया है। वहां एक जयापुर गांव है। जयापुर गांव ने मुझे गोद लिया है और वो जयापुर गांव मेरी रखवाली करता है, मेरी चिंता करता है। जयपुर में गया था मैंने उनको कहा था कि हमारे गांव में जब बेटी पैदा हो तो पूरे गांव का एक बड़ा महोत्सव होना चाहिए। आनंद उत्सव होना चाहिए और मैंने प्रार्थना की थी कि बेटी पैदा हो तो पाँच पेड़ बोने चाहिए। मुझे बाद में चिट्ठी आई। मेरे आने के एक-आध महीने बाद कोई एक बेटी जन्म का समाचार आया तो पूरे गांव ने उत्सव मनाया और उतना ही नहीं सब लोगों ने जाकर के पाँच पेड़ लगाए। मैं आपको भी कहता हूं। आपकी बेटी पैदा हो तो पाँच पेड़ लगाएंगे बेटी भी बड़ी होगी, पेड़ भी बड़ा होगा और जब शादी का समय आएगा वो पाँच पेड़ बेच दोगे न तो भी उसकी शादी का खर्चा यूँ ही निकल जाएगा।

भाईयों बहनों बड़ी सरलता से समझदारी के साथ इस काम को हमने आगे बढ़ाना है और इसलिए आज मैं हरियाणा की धरती, जहां यह सबसे बड़ी चुनौती है लेकिन हिंदुस्तान का कोई राज्य बाकी नहीं है कि जहां चुनौती नहीं है। और मैं जानता हूं यह दयानंद सरस्वती के संस्कारों से पली धरती है। एक बार हरियाणा के लोग ठान लें तो वे दुनिया को खड़ी करने की ताकत रखते हैं। मुझको बड़ा बनाने में हरियाणा का भी बहुत बड़ा role है। मैं सालों तक आपके बीच रहा हूं। आपके प्यार को भली-भांति मैं अनुभव करता हूं। आपने मुझे पाला-पोसा, बड़ा किया। मैं आज आपसे कुछ मांगने के लिए आया हूं। देश का प्रधानमंत्री एक भिक्षुक बनकर आपसे बेटियों की जिंदगी की भीख मांग रहा है। बेटियों को अपने परिवार का गर्व मानें, राष्ट्र का सम्मान मानें। आप देखिए यह असंतुलन में से हम बहुत तेजी से बाहर आ सकते हैं। बेटा और बेटी

दोनों वो पंख हैं जीवन की ऊंचाईयों को पाने का उसके बिना कोई संभावना नहीं और इसलिए ऊंची उड़ान भी भरनी है तो सपनों को बेटे और बेटी दोनों पंख चाहिए तभी तो सपने पूरे होंगे और इसलिए मेरे भाईयों और बहनों हम एक जिम्मेवारी के साथ इस काम को निभाएं।

मुझे बताया गया है कि हम सबको शपथ लेना है। आप जहां बैठे हैं वहीं बैठे रहिये, दोनों हाथ ऊपर कर दीजिए और मैं एक शपथ बोलता हूं मेरे साथ आप शपथ बोलेंगे - “मैं शपथ लेता हूं कि मैं लिंग चयन एवं कन्या भ्रूण हत्या का विरोध करूंगा; मैं बेटी के जन्म पर खुश होकर सुरक्षित वातारवण प्रदान करते हुए बेटी को सुशिक्षित करूंगा। मैं समाज में बेटी के प्रति भेदभाव खत्म करूंगा, मैं “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” का संदेश पूरे समाज में प्रसारित करूंगा।”

भाई बहनों मैं डॉक्टरों से भी एक बात करना चाहता हूं। मैं डॉक्टरों से पूछना चाहता हूं कि पैसे कमाने के लिए यही जगह बची है क्या? और यह पाप के पैसे आपको सुखी करेंगे क्या? अगर डॉक्टर का बेटा कुंवारा रह गया तो आगे चलकर के शैतान बन गया तो वो डॉक्टर के पैसे किस काम आएंगे? मैं डॉक्टरों को पूछना चाहता हूं कि यह आपको दायित्व नहीं है कि आप इस पाप में भागीदार नहीं बनेंगे। डॉक्टरों को अच्छा लगे, बुरा लगे, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि आपकी यह जिम्मेवारी है। आपको डॉक्टर बनाया है समाज ने, आपको पढ़-लिखकर के तैयार किया है। गरीब के पैसों से पलकर के बड़े हुए हो। आपको पढ़ाया गया है किसी की जिंदगी बचाने के लिए, आपको पढ़ाया गया है किसी की पीड़ा को मुक्त करने के लिए। आपको बच्चियों को मारने के लिए शिक्षा नहीं दी गई है। अपने आप को झकझोरिये, 50 बार सोचिए, आपके हाथ निर्दोष बेटियों के खून से रंगने नहीं चाहिए। जब शाम को खाना खाते हो तो उस थाली के सामने देखो। जिस मां ने, जिस पत्नी ने, जिस बहन ने वो खाना बनाया है वो भी तो किसी की बेटी है। अगर वो भी किसी डॉक्टर के हाथ चढ़ गई होती, तो आज आपकी थाली में खाना नहीं होता। आप भी सोचिए कहीं उस मां, बेटी, बहन ने आपके लिए जो खाना बनाया है, कहीं आपके के खून से रंगे हुए हाथ उस खाने की चपाती पर तो हाथ नहीं लगा रहे। जरा अपने आप को पूछिये मेरे डॉक्टर भाईयों और बहनों। यह पाप समाज द्रोह है। यह पाप सदियों की गुनाहगारी है और इसलिए एक सामाजिक दायित्व के तहत है, एक कर्तव्य के तहत और सरकारें किसकी-किसकी नहीं, यह दोषारोपण करने का वक्त नहीं है। हमारा काम है जहां से जग गए हैं, जाग करके सही दिशा में चलना।

मुझे विश्वास है पूरा देश इस संदेश को समझेगा। हम सब मिलकर के देश को भविष्य के संकट से बचाएंगे और फिर एक बार मैं हरियाणा को इतने बड़े विशाल कार्यक्रम के लिए और हरियाणा इस संदेश को उठा लेगा तो हिंदुस्तान तो हरियाणा के पीछे चल पड़ेगा। मैं फिर एक बार आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

**बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** इस संकल्प को लेकर हम जाएंगे। इसी अपेक्षा के साथ मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए - भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय।

\*\*\*\*\*

AK

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-जुलाई-2015 14:27 IST

**पटना में दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना तथा विभिन्न विकास परियोजनाओं के शुभारम्भ पर प्रधानमंत्री के  
भाषण का मूल पाठ**

देवियों और सज्जनों,

आज यहां अनेक शिलान्यास के और उद्घाटन के कार्यक्रम हुए। हम सब इस बात को अब भलीभांति समझने लगे हैं कि विकास का कोई पर्याय नहीं है। अगर हमें गरीबी से लड़ना है तो विकास करना होगा, हमें बेरोजगारी से लड़ना है, तो विकास करना होगा, हमें अशिक्षा से लड़ना है तो विकास करना होगा, यदि हमें आरोग्य की सुविधाएं मुहैया करानी होंगी तो विकास करना होगा। सब दुखों की अगर कोई एक दवाई है तो वो दवाई है - विकास। यह अच्छी बात है कि इन दिनों राज्यों के बीच भी विकास को लेकर एक स्पर्धा का माहौल बनता चला जा रहा है। राज्यों को लगने लगा है कि वो राज्य उस बात में मुझसे आगे निकल गया, अब हम कुछ कोशिश करेंगे, हम आगे निकलेंगे। आखिरकार देश को आगे बढ़ाना है तो राज्यों के विकास से ही आगे बढ़ने वाला है। इसलिए देश के विकास के लिए राज्यों का विकास.. इस मूलमंत्र को लेकर, केंद्र हो या राज्य हो, सबने मिलकर के काम करना, काम को आगे बढ़ाना, यह आवश्यक होता है।

विकास के कामों में राजनीति कितना नुकसान करती है उसका ब्यौरा आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने विस्तार से दिया। अटल जी के समय में जो काम.. छः महीने मिलते तो पूरा हो जाता, उसको पूरा होते-होते आज 2015 आ गया। मैं नीतीश जी की बात से सहमत हूं कि अटल जी की सरकार का चुनाव यदि थोड़ी देर से होता, छः महीने मिल जाते तो उस समय अटल जी के मार्गदर्शन में.. और यही के रेल मंत्री थे नीतीश जी, यह काम पूरा हो गया होता। वो सही बोल रहे हैं। लेकिन बाद में सरकार बदल गई और रेल मंत्री यहां से ऐसे आए कि काम को रोक दिया गया और हमारे आने के बाद उसको चालू किया गया। अब, राजनीति जो करते हैं करें लेकिन नुकसान बिहार का हुआ, बिहार की जनता का हुआ। नीतीश कुमार की इस व्यथा के साथ मैं भी अपना स्वर मिलाता हूं।

लेकिन मैं इस मत का हूं कि हमें विकास की यात्रा को निरंतर गति देना चाहिए। आज नीतीश जी ने बहुत अच्छी बातें बताई कि भई IIT है, हमें यहां की आवश्यकताओं के अनुसार और यहां की क्षमता के अनुसार नई-नई faculties को लाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि नए परिसर की क्षमता इतनी है, 500 बीघा ज़मीन है.. यह होगा। हम तो कोशिश यह कर रहे हैं कि दुनिया में जो top cost faculties हों उनको भी भारत में लाया जाए ताकि भारत के हमारे युवकों को देश के लिए जो आवश्यक है, जिस राज्य में IIT हैं, वहां जो आवश्यक है, उन विषयों को बल दिया जाए। सिर्फ दिल्ली में बैठ करके योजनाएं बनाने का वक्त पूरा हो गया। अब तो राज्य के मन में जो भाव उठते हैं, उसकी जो आवश्यकताएं होती हैं, उसके अनुसार ही दिल्ली को ढलना चाहिए, ये मेरी सोच है और मैं उसी को आगे बढ़ा रहा हूं।

आज यहां एक Incubation centre का प्रारंभ हो रहा है। ये Incubation centre मैं मानता हूं, ये एक बहुत बड़ा नजराना है। IIT complex, इमारत से भी ज्यादा, ये Incubation centre बहुत बड़ा महत्वपूर्ण हमारा initiative है। इसलिए मैं इस बात से convince हूं। मैं जिस प्रदेश से आया हूं, लोगों ने परिश्रम किया होगा, परमात्मा ने कृपा की होगी, लक्ष्मी ने वहां जाना पसंद किया होगा लेकिन ये भूमि है, जहां सरस्वती वास करती है। यहां के नौजवान तेजस्वी हैं। और मैं मानता हूं, यहां की जो तेजस्विता है वो पूरे हिंदुस्तान को तेजस्वी बना सके, ऐसी तेजस्विता इस धरती पर है। ..और मुझे विश्वास है कि ये जो Incubation centre हम सोच रहे हैं, बनाने जा रहे हैं, वो भी एक विशेष मकसद से है।

आज हम देख रहे हैं कि Medical services, health sector ये सिर्फ डॉक्टर नाड़ी पकड़ लें, चार सवाल पूछ लें और निर्णय नहीं होता कि बीमारी क्या है, दवाई क्या दें? ढेर सारे मशीनों के अंदर से शरीर को गुजारा जाता है, भांति-भांति मशीनों को शरीर पर लगाया जाता है उसके बाद बीमारी तय होती है, उसके बाद उपचार तय होता है। पूरे Health Sector में Technology का प्रभाव इतना बढ़ा है, इतने नये-नये संसाधनों का आविष्कार हो रहा है। आज भारत को गरीब व्यक्ति को अगर इन संसाधनों को मुहैया कराना पड़े.. विदेशों से लाना बहुत महंगा पड़ रहा है। इस पटना की धरती पर बिहार के मेरे नौजवानों की प्रतिभा को एक अवसर दिया जा रहा है कि इस incubation centre में प्रमुख रूप से Electronic and

Digital mechanics के साथ किस प्रकार से हम Health Sector के नये विषयों में आविष्कार करें, उसका उत्पादन करें ताकि हमारे गरीब से गरीब के लिए हमारे अस्पतालों में भारत में बने हुए उत्तम से उत्तम साधन तैयार हों, जिसका लाभ गरीब को मिले, उस दिशा में हम काम करें। इसलिए यह incubation Centre भले ही पटना की धरती पर बनने वाला हो, लेकिन वह हिंदुस्तान के गरीबों के आरोग्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का एक अहम कार्यक्रम बनेगा, यह मैं देख रहा हूँ।

आखिरकार विकास करना है तो infrastructure का बहुत महत्व होता है। अगर infrastructure को बहुत महत्व नहीं दिया गया तो हम बहुत पिछड़कर रह जाएंगे। बिहार में चाहे rail हो, road हो air हो, उसको infrastructure मिलें, उसकी connectivity बढ़े, capacity बढ़े, इस पर हम बल दे रहे हैं। हिंदुस्तान में शायद अधिकतम रेलमंत्री यदि किसी राज्य ने दिये है तो बिहार ने दिये हैं। जमाने से जैसे यह रेल डिपार्टमेंट बिहार के लिए reservation है। रेल मंत्री तो मिले हैं, रेल देने का काम मेरे दिमाग में भरा पड़ा है। मैं रेल के माध्यम से बिहार के दूर-सुदूर इलाकों को कैसे जोड़ पाऊं, मुख्य धारा में विकास की.. यहां infrastructure आता है, उसको कैसे आगे बढ़ाऊं, इस दिशा में योजनाएं लेकर के आगे चल रहा हूँ।

आज एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम हमने launch किया है। वैसे नीतीश जी ने धर्मेंद्र प्रधान जी की इतनी तारीफ कर दी है, उसी से मुझे समझ आता है कि इस प्रोजेक्ट का कितना महत्व है। नीतीश जी की बात सही है, आने वाले दिनों में जिस प्रकार से रोड का महत्व है, रेल का महत्व है वैसे ही गैस ग्रिड का भी महत्व है। पूरी economy में गैस आधारित economy shape ले रही है और गैस पहुंचाने के लिए महंगा खर्चीला नेटवर्क खड़ा करना पड़ता है, infrastructure बनाना पड़ता है। मैं देख रहा हूँ कि energy के sector में गैस की उपलब्धि उस देश की पूरी economy को बदल देती है। बिहार की economy को बदलने का एक बहुत बड़ा ताकतवर प्रयास.. गंगा तो हमारे पास है ही है, हम ऊर्जा गंगा को लेकर के आ रहे हैं आपके पास।

गैस पाइप लाइन बिछाएंगे सैंकड़ों किलोमीटर। पटना में पाइप लाइन से घर-घर गैस कैसे पहुंचे.. जैसे हमारे घर में गृहणी के kitchen में tap चालू करते ही पानी आता है, वैसे ही tap चालू करते ही गैस आ जाए, इसके लिए यह योजना है। हर परिवार को यह पहुंचे है .. सैंकड़ों किलोमीटर से दूर से पाइप लाइन आएगी, हां बड़ा महंगा कारोबार है लेकिन एक बार अगर वह लग गया तो सालों साल तक यहां के जीवन को भी लाभ होगा और यहां के quality of life में भी बहुत बड़ा फायदा होगा, economy में भी फायदा होगा।

जैसा नीतीश जी ने कहा कि बिजली का पैसा तक माफ कर दिया है, fertilizer कारखाने का। उस समय हमारे सुशील जी आया करते थे कि साहब हमसे 300 करोड़ क्यों ले रहे हो। लेकिन फिर भी बिहार ने तकलीफ झेल करके भी इस काम को किया है। वित्त मंत्री थे हमारे सुशील जी, कठिनाई होने के बावजूद भी किया। यह करने के बावजूद भी 10 साल बीत गए साहब, fertilizer कारखाने की किसी को याद नहीं आई। क्या गुनाह है बिहार का? बिहार की जेब से पैसा निकाल करके यहां की सरकार ने तकलीफ होने के बावजूद भी दिया लेकिन उसको रोक दिया गया। हमने तय किया है कि यह बिहार का यह हक है। यह fertilizer का काम चालू होगा। यहां के किसानों को सस्ता fertilizer मिले, यह काम हम करेंगे। बिहार की जनता का या बिहार की सरकार का कोई दोष नहीं था। बिहार की सरकार आगे आई थी। लेकिन काम रोक दिया गया। लेकिन भाईयों बहनों मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह काम भी पूरा होगा और नौजवानों को रोजगार भी मिलेगा और किसान को fertilizer भी पहुंचेगा, इसका पूरा प्रबंध करके हम आगे बढ़ेंगे।

भाईयों बहनों, विकास की इस अवधारणा में हमने यह भी हमेशा निरंतर प्रयास किया है, cooperative federalism का। हमारा मत है कि राज्यों को अगर सहायता मिले, राज्यों को अगर अवसर मिले तो देश के आगे बढ़ने की ताकत बहुत बढ़ जाएगी। इसलिए 14th finance commission जो कि लागू हुआ है, उसके कारण बहुत बड़ा लाभ राज्यों को हो रहा है। एक राज्य को हो रहा है, एक को नहीं हो रहा है, ऐसा नहीं है। सभी राज्यों को हो रहा है। इसलिए कोई बिहार को कम मिला, अधिक मिला, किसी और राज्य को कम मिला, अधिक मिला, ऐसा नहीं है। क्योंकि हमारी योजना है। आज स्थिति ऐसी है.. एक जमाना था भारत का खजाना जो था, केंद्र का और राज्य का उसमें से 65-70% खजाना दिल्ली की सरकार की तिजोरी में रहता था। 38-35% सभी राज्यों की मिला करके तिजोरी में रहता था। हमने ऐसा एक महत्वपूर्ण फैसला किया है, कठिन काम लिया है सर पर। लेकिन जैसा नीतीश जी ने कहा कि मोदी जी आप पर हमारी आशा है, उसको पूरा करने के लिए हमने एक महत्वपूर्ण फैसला किया है। वो फैसला है vote in finance commission जिसके कारण आने वाले दिनों में बिहार को .. अगर पांच साल के finance commission का मैं देखू तो बिहार को 2015 से 2020 के दरम्यान finance commission के द्वारा करीब-करीब पौने चार लाख करोड़ के करीब रुपया मिलने वाले हैं। पौने चार लाख करोड़ के करीब रुपया मिलने वाले हैं, जो पहले सिर्फ बीते हुए समय में सिर्फ डेढ़ लाख करोड़ रुपया मिला था। डेढ़ लाख का पौने चार लाख करोड़ रुपया आने वाले दिनों में.. क्योंकि हम मानते हैं कि यह प्रदेश आगे बढ़ना चाहिए।

मेरा यह विश्वास है कि पूरब में जब तक प्रगति नहीं होती है, देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता। चाहे बिहार हो, चाहे पूर्वी उत्तर प्रदेश हो, चाहे ओडिशा हो, चाहे पश्चिम बंगाल हो, चाहे झारखंड हो असम हो, नागालैंड हो, मिजोरम हो, यह सारा हिंदुस्तान का पूर्वी भाग यह जब विकसित नहीं होता है, यह भारत माता हमारी समृद्ध नहीं हो सकती है। इसलिए बिहार का विकास, यह हमारा प्राइम एजेंडा है। पूर्वी भारत का विकास, हमारा मकसद है, हमारा लक्ष्य है। उसको आगे बढ़ाने के लिए अनेक विध हम नई योजनाएं लाने वाले हैं, उसको पूरा करेंगे।

आने वाले कुछ दिनों में हमारे कुछ साथियों से मैंने कहा है कि आप जाइये, शिलान्यास कीजिए, उद्घाटन कीजिए, काम को आगे बढ़ाइये। जैसे मुजफ्फरपुर स्वर्ण-वर्ष नेशनल हाइवे, 77 किलोमीटर को double lane करने का काम पूर्ण हो चुका है। करीब छः सौ करोड़ रुपया की लागत लगी है। पटना-गया-डोबी रोड के four laning का काम मंजूर हो गया है। करीब 1231 करोड़ रुपये की लागत है। पटना-कोयलावर-भोजपुर और भोजपुर-बक्सर रोड के भी four laning का काम मंजूर हो चुका है। लागत है करीब 2012 करोड़ रुपया। भागलपुर बाइपास का काम मंजूर हो गया है। लागत है करीब 230 करोड़ रुपया। शिवहरी-सीतामढ़ी-जयनगर-निरहिया रोड का भी सुधार मंजूर कर दिया गया है। लागत है करीब 701 करोड़ रुपया। फतवा-हरनोद-बारा रोड का काम भी मंजूर कर दिया है। लागत है करीब 590 करोड़ रुपया। यह सारे नेशनल हाइवे के प्रोजेक्ट जो इस सरकार ने already मंजूर कर दिये हैं, इन सबकी लागत होती है करीब-करीब पांच हजार करोड़ रुपया। क्योंकि मैं जानता हूँ कि बिहार को विकास की नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए इन चीजों का भरपूर उपयोग होना चाहिए। और हम इसको करना चाहते हैं।

आपको याद होगा पिछले लोकसभा के चुनाव में मैं यहां आया था। गांधी मैदान में बम धमाकों के बीच, मैं भाषण कर रहा था। उस समय मैंने कहा था कि केंद्र में हम सत्ता में आएंगे तो बिहार को विशेष पैकेज देंगे। उस समय मैंने घोषणा की थी.. चुनाव के पहले मैंने घोषणा की थी, मैंने कहा था कि 50 हजार करोड़ रुपयों का पैकेज बिहार को दिया जाएगा। भाईयों बहनों! मैं जब दिल्ली में बैठा, बारीकी से चीजों को देखा तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मेरे दिल दिमाग में बिहार की जो कल्पना है, बिहार को अगर मुझे उस ऊंचाई पर ले जाने में बिहार को साथ लेकर के चलना है तो 50 हजार करोड़ से बात बनने वाली नहीं है। उसे और अधिक करने की आवश्यकता है। मैं आज उसकी घोषणा नहीं करूंगा, मैं सही समय पर आ करके उसकी घोषणा करूंगा, लेकिन मैं इतना कहता हूँ कि मैंने जो वादा किया उसको तो निभाऊंगा, उससे भी आगे मामला ले जाऊंगा, यह आपको मैं वादा करने आया हूँ। ताकि बिहार को विकास की यात्रा में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए और विकास की यात्रा तेज गति से आगे बढ़नी चाहिए।

इसी एक अपेक्षा के साथ, मुझे विश्वास है कि आज जिन योजनाओं का आरंभ हुआ है, जिन कार्यक्रमों की शुरुआत हो गई है, और भी हमारे मंत्रिगण के लोग आने वाले हैं, वो इस बात को आगे बढ़ाएंगे। आज यहां पर देशभर के कृषि वैज्ञानिकों को मैंने बुलाया है, पटना की धरती पर। अब इस कार्यक्रम के बाद उनके साथ बैठने वाला हूँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि हिंदुस्तान की second green revolution की संभावना अगर कहीं है, तो हिंदुस्तान के पूर्वी इलाके में है। बिहार में है, बंगाल में है, असम में है, पूर्वी उत्तर प्रदेश में है। second green revolution की संभावना इस इलाके में है। इसलिए मैंने देशभर के कृषि वैज्ञानिकों को आज पटना की धरती पर बुलाया है। वो यहां बैठ करके विचार-विमर्श करने वाले हैं। आने वाले दिनों में यहां के कृषि क्षेत्र को एक नई ताकत देने की दिशा में प्रयास करने वाले हैं।

मैं फिर एक बार बिहार सरकार का, बिहार की जनता-जर्नादन का, यहां के मुख्यमंत्री जी का स्वागत सम्मान के लिए हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

अमित कुमार/ रजनी / तारा

पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

01-जुलाई-2015 20:15 IST

डिजिटल इंडिया सप्ताह के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री जी के वक्तव्य का मूल पाठ



मंच पर विराजमान मंत्री परिषद के मेरे सभी साथी, उद्योग जगत के सभी मित्र भिन्न भिन्न देशों के सभी राजदूत और बहुत बड़ी संख्या में पधारे हुए नौजवान दोस्तों,

मैं श्रीमान रविशंकर प्रसाद और उनकी टीम को हृदय से बहुत बहुत अभिनंदन करता हूँ, बधाई देता हूँ कि उन्होंने comprehensive integrated approach के साथ भारत के भविष्य को बदलने का एक खाका खींचा है और जिस बारीकी से सारी योजनाओं की रचना की है, मुझे विश्वास है कि करोड़ों देशवासी जिन सपनों को संजो रहे हैं वे सपने साकार हो कर रहेंगे।

उद्योग जगत के कुछ मित्रों को यहां मंच पर, डिजिटल इंडिया के संदर्भ में वे क्या सोचते हैं वे क्या कर सकते हैं के विचार हमें सुनने को मिले। हमारे रविशंकरप्रसाद जी हिसाब लगा रहे थे बैठे बैठे, कि वो क्या बोल रहे हैं और उन्होंने मुझे बताया है कि करीब करीब साढ़े चार लाख करोड़ रुपये का investment.. और करीब करीब 18 लाख लोगों को रोजगार.. और यह तो जो ऊपर बैठे हैं उन्होंने बताया है और नीचे बहुत बड़ी मात्रा में बैठे हैं.. उनका अभी सुनना बाकी है। यहां बहुत बड़ी मात्रा में इस क्षेत्र में पहले से ही काम करने वाले उद्योग जगत के मित्र बैठे हैं।

वक्त बहुत तेजी से बदल चुका है। पहले हम लोग कभी किसी परिवार में जाते थे और छोटे बच्चे से बात करते थे तो बच्चा क्या करता था? अगर आपका चश्मा है तो खींच के ले जाता था या आपकी जेब में पेन है तो उसको उठाता था। लेकिन आज आप मार्क करना कि वह न चश्मे को हाथ लगाता है न पेन को हाथ लगाता है वह आपका मोबाइल फोन छीनता है। मोबाइल फोन हाथ में आते ही ठीक से पकड़ता है, आप मार्क करना.. और अपना शुरू कर देता है और अगर, जैसा चाहे वैसा आपरेशन नहीं होता तो रोने लगता है यानी बाकी वह कुछ समझे या ना समझे डिजिटल ताकत को समझता है। समय की मांग है कि हम इस बदलाव को समझें और अगर हम इस बदलाव को नहीं समझेंगे तो हम कहीं पड़ रहेंगे कोने में दुनिया दूर चली जाएगी और हम देखते ही रह जायेंगे एक समय था कि सदियों पहले लोग बसते थे, नदी के तट पर। गांव बसते थे, शहर बसते थे नदी के तट पर या समुंद्र के किनारे पर।

वक्त बदल गया बाद में जहां जहां से हाइवे गुजरते थे, शहर वहां बसना शुरू हुए लेकिन अब मानव जाति वहीं पर बसेगी जहां से ऑप्टिकल फाइबर गुजरता होगा। ये बहुत बड़ा बदलाव आया है और इसलिए अगर विश्व के अंदर सवा सौ करोड़ का देश, अपनी ताकत का अहसास कराना चाहता है तो जो हजारों साल पुरानी महान संस्कृति है.. हम सवा सौ करोड़ देशवासी हैं, हम 65 प्रतिशत 35 साल से कम उम्र के हैं, ये गीत गाने से बात बनने वाली नहीं है। ये जो भी विरासत है, जो सामर्थ्य है, उसके साथ आधुनिक विज्ञान को, आधुनिक टेक्नोलॉजी को जोड़ना अनिवार्य है। अगर demographic dividend.. इसको अगर digital strength नहीं मिलेगी तो ये demographic dividend.. हम global level पर जितनी मात्रा में फायदा उठाना चाहिए नहीं उठा पायेंगे। इसलिए देश को तैयार करने की आवश्यकता है। आज हमारे देश में करीब करीब 25 करोड़-तीस करोड़ internet users हैं। users की संख्या में तो दुनिया में ये संख्या बहुत बड़ी है लेकिन जो इससे वंचित है वो संख्या भी दुनिया के हिसाब से बड़ी है। जिनकी अपनी पहुंच थी जिनकी अपनी ताकत थी जो खुद कर सकता था, जिसको जरूरत थी, उन्होंने तो अपना कर लिया। लेकिन जो खुद नहीं कर सकता है, उसको उसके नसीब पर छोड़ देना चाहिए क्या? देश का एक तबका.. वो तो Digital world के साथ बहुत तेज गति से आगे बढ़ता हो और देश का बहुत बड़ा तबका उससे वंचित रह जाए तो जो अमीर और गरीब की खाई के कारण समस्याएं पैदा होती हैं, शहर और गांव में सुविधा के कारण जो खाई पैदा होती है, उससे भंयकर स्थिति Digital Divide के कारण पैदा हो सकती है।

इसलिए यह हमारा दायित्व बनता है, हमारी जिम्मेवारी बनती है कि हम इस आधुनिक विज्ञान, जो कि मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक बहुत बड़ा catalyst agent बना हुआ है, उससे गरीब से गरीब भी वंचित नहीं रहना चाहिए। यह सुविधा जब तक हम गांव, गरीब, किसान तक नहीं पहुंचाएंगे तो यह विकास की जो बातें हैं, न वो उसका लाभ उठा पाएगा, न हम उसको सेवा दे पाएंगे। इसलिए इस चुनौती को हमने स्वीकार किया है कि आने वाले वर्षों में, दूर-सुदूर गांव में भी गरीब से गरीब व्यक्ति को भी इस platform को उपलब्ध कराना चाहिए, जिस platform से वो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम.. आवश्यकता के अनुसार उपयोग करता रहे। दुनिया जिस प्रकार से बदल रही है, आपने देखा होगा आपको घर में.. मान लीजिए कभी तय करें कि चलो भई किसी restaurant में आज अच्छा खाने जाना है, परिवार के चार लोग बैठकर के चर्चा करें कि कहां जाएंगे और आपका 15-16 साल का बच्चा है, वो सुनता है, तो वो क्या करता है.. तुरंत वो Google गुरु के पास जाता है। Google गुरु से पूछता है कि नजदीक में अच्छे से अच्छा restaurant कौन सा है, अच्छे से अच्छा menu कौन सा है? और वो table पर वहां बैठे बैठे बुक करा देता है। यह इतना बड़ा बदलाव है, इस बदलाव को समझते हुए हमने भी अपनी व्यवस्थाओं को विकसित करना चाहिए। minimum government maximum governance, इस सपने को साकार करने में technology बहुत बड़ा रोल प्ले करती है। e-governance, सामान्य मानव की.. जो शासकीय सेवाओं में उसका हक है, उसको प्राप्त करने के लिए उत्तम से उत्तम मार्ग है। e-governance बहुत ही तेजी से m-governance में बदलने वाला है। 'm' does not mean Modi Governance, it is mobile governance. सारा कारोबार, सारी आवश्यकताएं, सारी व्यवस्थाएं मोबाइल फोन के ईद-गिर्द.. पूरी सरकार आपके मोबाइल फोन में मौजूद होने वाली है, वो दिन दूर नहीं है।

लेकिन इसके लिए हमें अपने आप को सजग करना होगा, व्यवस्थाएं विकसित करनी होंगी। e-governance easy governance, is economical governance.. आर्थिक रूप से अनुकूल यह governance.. और उसको हम जितना बल दे सकें, हमें उसको बल देना है। उसी प्रकार से हमारे सामने समस्या रहती है, सरकार में, एक ही काम के लिए इतनी multiple activity करनी पड़ती है, इतना समय बर्बाद होता है। आधुनिक विज्ञान के माध्यम से conversion इतना सरल होता है.. और जैसा अभी आपको presentation में बताया कि आज सरकार में 10 जगह पर 10 काम हैं तो सारे certificate दस जगह पर देने पड़ते हैं। अब वो सारी मुसीबत चली जाएगी। जब व्यवस्थाएं खड़ी हो जाएंगी तो आपके एक Digital number से उसको सारी चीजें उपलब्ध हो जाएंगी और कारोबार आगे चलता चला जाएगा। आने वाले दिनों में.. आज हम चर्चा करते हैं कि बच्चों को इतना बोझ उठाकर के स्कूल जाना पड़ता है। उनके बक्से में उनके वजन से ज्यादा किताबों का वजन होता है। इन बालकों की समस्या का समाधान भी Digital India में है। सारा syllabus एक छोटे से equipment में वो अपने साथ लेकर के घूम सकता है। इसलिए कुछ लोग, ऐसी जब बात होती है तो उनको लगता है कि यह तो बड़ा elite class के लिए काम है, बड़े लोगों के लिए

काम है.. हकीकत नहीं है।

जब satellite छोड़े जाते थे, आज से कुछ वर्षों पहले, तो कुछ लोग डिबेट करते थे कि भारत जैसा गरीब देश! यह satellite किस के लिए छोड़े जा रहे हैं! क्या उपयोग है! लेकिन आज वही satellite, weather forecast अगर सही ढंग से करता है तो सीधा-सीधा फायदा गरीब किसान को होता है। जब खर्चा करते हैं तो आलोचना होती है लेकिन वही बाद में मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह सारी योजनाएं जो आपने देखीं.. अब देखिए आज, तो बैंक में जाना वगैरह सब है लेकिन वो दिन अब दूर नहीं है कि बैंक पेपर लेस होने वाला है, बैंक premises less होने वाला है। पूरा बैंकिंग कारोबार आपके मोबाइल फोन से चलने वाला है।

यह जो बदलाव आ रहा है, इस बदलाव के लिए हमें अपने आप को सजग करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए। अगर हम देखें तो हम 19वीं शताब्दी से.. तब से इन कामों को तेज गति से आगे बढ़ाने की आवश्यकता थी। जब दुनिया ने Industrial revolution देखा, हम पिछड़ गए, क्यों? क्योंकि हम गुलाम थे। औद्योगिक क्रांति का हमें लाभ नहीं मिला। लेकिन आज जब IT revolution आया, हम आजाद हैं, हम youthful nation हैं और हमारे पास talent है। जहां तक IT की बात होगी, दुनिया हिंदुस्तान का लोहा मानती है। हमें यह मौका गंवाना नहीं है। गुलामी के कालखंड में हमने जो मौका गंवाया, यह मौका हमें IT revolution में गंवाना नहीं है। इसके सामने कुछ और चीजों पर भी बल देने की आवश्यकता है। Petroleum Import की हमारी मजबूरी है, ऊर्जा की आवश्यकता है, जरूरत पड़ती है, हमारे पास source कम है, लाना पड़ता है। लेकिन यह बात गले नहीं उतरती है कि हिंदुस्तान का second highest import electronic goods हैं। क्या यह देश, जहां पर इतने IT Professionals हो, जहां इतनी बड़ी मात्रा में उद्योगकार हों.. और कोई इतनी बड़ी technology भी नहीं है। क्या हम हमारे देश में electronic goods इतनी बड़ी मात्रा में न बना पाएंगे कि जो qualitatively globally competitive हों, और भारत का बना हुआ हो ताकि भारत को कभी बाहर से import न करना पड़े।

Digital India के माध्यम से हम electronic good को हिंदुस्तान में manufacture करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। हम देश के उद्योग जगत को निमंत्रित करना चाहते हैं। मैं नौजवानों को भी, start-up के लिए जो मदद चाहिए, सरकार देने के लिए तैयार है। और आज दुनिया में start-up की दिशा में हिंदुस्तान के नौजवानों की संख्या बहुत बड़ी मात्रा में है। आने वाले दिनों में शायद अमेरिका के बाद हम नंबर दो पर आ जाएंगे, start-up के लिए। लेकिन इसे और बढ़ाना है। मैं देश के नौजवानों को भी चुनौती देता हूं, अगर IT Professional हमारे हैं, दुनिया के IT कंपनियों में ढेर सारी मात्रा में भारतीय मूल के लोग नजर आते हैं, लेकिन क्या कारण है कि Google का innovation हमारे यहां नहीं होता है। क्या कारण है कि innovation बाहर होते हैं। Digital India के माध्यम से हम देश के नौजवानों को innovations के लिए आह्वान कर रहे हैं, कि आप आइए, इस चुनौती को स्वीकार कीजिए।

भारत जैसे देश को सबसे पहली आवश्यकता है.. जैसे Make in India का महत्व है, वैसे ही Design in India भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हमारे देश के नागरिकों की रुचि, प्रकृति, प्रवृत्ति के अनुसार हमारा प्रोडक्ट तैयार हो। वो जिस भाषा में समझता है, उस भाषा में प्रोडक्ट तैयार है। जिस age group को address करना है, उसकी आवश्यकता है के अनुसार प्रोडक्ट तैयार हो। सवा सौ करोड़ देशवासियों का बाजार है। हमारे देश के नौजवान अपने talent का उपयोग करते हुए, innovations को ध्यान में रखते हुए Design in India.. इस concept को पकड़ते हुए Digital India के अंदर नई ताकत, नए प्राण भर सकते हैं.. और उसको बल देने के लिए मैं देश के नौजवानों का आह्वान करता हूं। विश्व की ओर नजर करें, मैं मानता हूं कि भारत को एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी अदा करने का समय आ गया है। हम देख सकते हैं कि दुनिया में रक्तविहीन युद्ध.. और मैं बहुत जिम्मेवारी के साथ बोल रहा हूं, रक्तविहीन युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। इस रक्तविहीन युद्ध के जब बादल मंडरा रहे हैं तो ऐसे में सुख-चैन की जिंदगी जी सके, क्या भारत इसका नेतृत्व कर सकता है कि नहीं कर सकता है? विश्व को सुख-चैन की जिंदगी जीने के लिए रक्तहीन युद्ध से सुरक्षा देने के लिए क्या भारत का talent काम आ सकता है कि नहीं आ सकता है? मैं जो रक्तहीन युद्ध की बात करता हूं, वो मुद्दा है – cyber security का, उस पर हम बल देना चाहते हैं। और आज जब हम इस Digital India को launch कर रहे हैं तब उनको सपनों को साकार करने का हमारा प्रयास है तब मैं जरूर कहना चाहूंगा...

I dream of a DIGITAL INDIA where:

High-speed **Digital Highways** unite the Nation

एक जमाना था Highways के लिए मांग होती थी अब अकेले Highways से चलने वाला नहीं है। Highways भी चाहिए और information Highways भी चाहिए

I dream of a DIGITAL INDIA where: 1.2 billion **Connected Indians** drive Innovation

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Knowledge** is strength – and empowers the People

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Access** to Information knows no barriers

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Government** is Open - and **Governance** Transparent... और मैं जब कह रहा हूं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने में technology बहुत बड़ी मदद कर सकती है। सारे लीकेजेस को रोका जा सकता है। हमने जो अभी कोयले का auction किया सारा Digital platform का उपयोग किया था। अनेक खादानों का auction हुआ, लाखों करोड़ों का काम हुआ, लेकिन यह सरकार पर एक भी इल्जाम नहीं लगा। क्यों, क्योंकि हमने इस Digital platform का उपयोग किया, सम्पूर्ण रूप से transparency पर हमने बल दिया। और इसलिए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भी information and communication technology एक बहुत बड़ा instrument के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

I dream of a DIGITAL INDIA where: Technology ensures the **Citizen-Government Interface is Incorruptible**

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Government Services** are easily and efficiently available to citizens on Mobile devices

I dream of a DIGITAL INDIA where: Government proactively engages with the people through **Social Media**

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Quality Education** reaches the most inaccessible corners driven by Digital Learning

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Quality Healthcare** percolates right up to the remotest regions powered by e-Healthcare

I dream of a DIGITAL INDIA where: **Farmers** are empowered with **Real-time Information** to be connected with Global Markets

I dream of a DIGITAL INDIA where: Mobile enabled Emergency Services ensure **Personal Security**

I dream of a DIGITAL INDIA where: Cyber Security becomes an integral part of our **National Security**

I dream of a DIGITAL INDIA where: Mobile and e-Banking ensures **Financial Inclusion**

I dream of a DIGITAL INDIA where: **e-Commerce** drives Entrepreneurship

I dream of a DIGITAL INDIA where: the World looks to India for the **next Big Idea**

I dream of a DIGITAL INDIA where: the **Netizen** is an **Empowered Citizen**

Thank you.

\*\*\*

अमित कुमार/ रजनी/ तारा/ उत्कर्ष/ सलीम अहमद

